Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-2, Issue-4, Continuous Issue-10, November - December 2021

जनसरोकारों के प्रश्नों से जूझते रचनाकार रघुवीर सहाय

शोध सारांश

सामाजिक सरोकारों के रचनाकार रघुवीर सहाय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार हो या संवेदनहीनता उससे उनको बड़ी चिढ़ थी समाज सुधार के लिए वे यथास्थिति वाद को जिम्मेदार समझते थे उनका मानना था कि बिना हस्तक्षेप समाज सुधार असंभव है समाज का इतना पतन हो चुका था कि अपराधी खुलेआम घोषणा करके हत्या कर रहे थे और समाज निरपेक्ष भाव से देख रहा था।।

जब भी अखबार पर नजर जाती है अक्सर पढ़ने को हत्या ,बलात्कार, चोरी, आगजनी, आतंकवाद, भ्रष्टाचार की खबरें मिलती हैं। ऐसे में हिंदी के मूर्धन्य रचनाकार रघुवीर सहाय के रचना संसार पर जाकर नजर ठहर जाती है। उनकी रचनाएं न तो आप बीती बयान करती हैं और न नारेबाजी ,बल्कि सचेतनता के साथ जनता के साथ संवाद कायम करती हैं। यही कारण है कि रघुवीर सहाय यथार्थ की बेहद सहज अभिव्यक्ति करते हैं।

बीज शब्द: आत्महत्या के विरुद्ध,राजनीतिक बयानबाजी, हस्तक्षेप, वीभत्स यथार्थ, हुड़दंग और दंगे

शोध आलेख पेशे से पत्रकार होते हुए भी सहाय जी ने कविताएं, कहानियां, निबंध, अनुवाद आदि रचनात्मक कार्य किए। साहित्य जगत में इनकी 'रामदास', 'हंसो जल्दी हंसो', 'आत्महत्या के विरुद्ध' कविताएं मील का पत्थर है। जिनके बिना हिंदी साहित्य का इतिहास अधूरा है। इनकी प्रकाशित रचनाएं हैं- कविता संग्रह में संकलित – 'सीढ़ियों पर धूप में', 'आत्महत्या के विरुद्ध',' एक समय था', 'लोग भूल गए हैं', जिस पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला। कहानी संग्रह – 'रास्ता इधर से हैं', 'जो आदमी हम बना रहे हैं'। निबंध संग्रह – 'दिल मेरा प्रदेश', 'लिखने का कारण' ,'ऊबे हुए सुखी', 'वे और नहीं होंगे जो मारे जाएंगे', 'लहरें और तरंग'। इनकी सभी रचनाओं में पत्रकारिता के तेवर और अखबार देखने को मिलता है। जिसे आलोचक रघुवीर तेवर भी कहते थे। विषय वस्तु की दृष्टि से इन्होंने अधिकांशत ; उन मुद्दों और विषयों को छुआ जिनमें आम आदमी की पीड़ा अभिव्यक्ति पाती है। इन्होंने समकालीन राजनीति पर कटाक्ष का कोई मौका नहीं छोड़ा, इसलिए अकेलेपन से भी परे जाकर अलग मुद्दों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया । इनकी

जिंदगी पर साहित्य के क्षेत्र में अज्ञेय एवं राजनीतिक क्षेत्र में राम मनोहर लोहिया जी का स्पष्ट प्रभाव था।

नन्द किशोर नवल रघुवीर सहाय जी की रचना धर्मिता के विषय में लिखते हैं – "हंसों हंसों जल्दी हंसो की कविताओं का मुख्य विषय राजनीति है । लेकिन इन कविताओं का असल नायक साधारण जन है। जो कविताएं राजनीतिक हैं उनके पास में भी साधारण जन खड़ा है या फिर साधारण जन के नजरिए से ही कवि ने किसी राजनीतीक घटना या चरित्र को देखा है"।

देश के साधारण जन को उनके अधिकारों से वंचित रखते हुए उनका शोषण किया गया है । हंसों हंसों जल्दी हंसो की पानी – पानी कविता इसका सटीक उदाहरण है। इनकी कविताओं का उद्देश्य मात्र जनता की लाचारी का चित्रण मात्र नहीं है । अपितु साधारण जनता को अपने अहिकारों के प्रति सजग करना भी है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में आक्रोश और विद्रोह के स्वरों को भी अभिव्यक्ति मिली है।

राजनीति, राष्ट्र, महिलाएं, बुजुर्ग, शोषित – पीड़ित, सामाजिक संबंधों एवं जन समस्याओं को इन्होंने अपने लेखन का विषय बनाया। इनकी रचनाओं की भाषा सहज एवं सरल है। इनकी आरंभी कविताओं में प्रेम भी है। जो इनके तरुण जीवन की सहज अभिव्यक्ति है।

" आओ उस कुछ को हम पार करें

एक दूसरे के उसी विगलित मन को स्वीकार करें"1

समाजवादी विचारधारा के होने और लोहिया के रास्ते पर चलने पर भी यह पूर्णतया नास्तिक नहीं थे। उनकी अनेक कविताएं इस मत की स्थापना में सहायक भी हैं। इन्होंने प्रकृति से भी तादात्मय स्थापित किया है और यही कारण रहा कि दूसरे सप्तक में संकलित कविताएं बसंत और पहला पानी कविता प्रकाशित हुई। बांसत में प्रकृति का मनोरम चित्र उकेरते हैं।

-" वन की रानी हरियाली – सा भोला अंतर

सरसों के फूलों सी जिसकी खिली जवानी

पकी फसल सा गरुआ गदराया जिसका तन

अपने प्रिय को आता देख लजाती जाती

गरम गुलाबी शर्माहट सा हल्का जाड़ा

स्निग्ध गेहूंए गालों पर कानों तक चढ़ती लाली जैसे फ़ाइल रहा है"2

वे अपने जीवन पर अपने पिता का सर्वाधिक प्रभाव अनुभूत करते थे। पिता उन्हें विरासत में परिवार परिवार की जिम्मेदारियां ही तो दे गए थे ।

“यही मैं हूं

और जब मैं यही होता हूं

थका या उन्हीं के से वस्त्र पहने ।

जो मुझे प्रिय हैं।

दुखी मन में उतर आती है पिता की छवि

अभी तक जिन्हें कष्टों से नहीं निष्कृति

उन्ही अपने पिता की मैं अनुकृति हूं

यही मैं हूं”3

वह काव्य में सौंदर्य बोध और वीभत्स यथार्थ एक साथ रख सकते थे।

वे व्यक्तित्व के ह्रास ,उसकी कायरता, कमियों से बेहद नाराज रहते थे और चाहते थे कि व्यक्ति “एक संपूर्ण मनुष्य बने।

सभी लुजलुजे हैं

मोलतोल करते हैं

हिचकिचाते हैं, मुकर जाते हैं।

तपाक से मिलते हैं, कतरा जाते हैं ।

बीड़ा उठाते हैं ,बुरा माने जाते हैं।

सभी लूज लुजे हैं।

गिज गिज हैं, गिल गिल है”4

भाषा और समाज उनके लिए बड़ी चुनौती थे। जहां तक हिंदी का सवाल है, भाषा के स्तर पर भी उनको लगता था कि हम लड़ाई हार चुके हैं । अब हिंदी को पूर्ण रूप से राजभाषा का दर्जा मिलना बेहद असंभव है।

“हम लड़ रहे हैं समाज को बदलने के लिए एक भाषा का युद्ध

पर हिंदी का प्रश्न, अब हिंदी का प्रश्न नहीं रह गया

हम हार चुके हैं।

“हमारी हिंदी दुहाजू की नई बीवी है।

बहुत बोलने वाली, बहुत खाने वाली , बहुत सोने वाली

गहने गढ़ाते जाओ, सिर पर चढ़ाते जाओ”5

समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार हो या संवेदनहीनता उससे उनको बड़ी चिढ़ थी। समाज सुधार के लिए वे यथा स्थितिबाद को जिम्मेदार समझते थे। उनका मानना था कि बिना हस्तक्षेप समाज का सुधार असंभव है। समाज का इतना पतन हो चुका था कि अपराधी खुलेआम घोषणा करके हत्या कर रहे थे और समाज निरपेक्ष भाव से देख रहा था ।

“रामदास उस दिन उदास था

अंत समय आ गया पास था

उसे बता यह दिया गया था उसकी हत्या होगी।

सभी जानते थे उस दिन उसकी हत्या होगी।

--- आया उसने नाम पुकारा

हाथ तौलकर चाकू मारा

छूटा लोहू का फव्वारा

कहा नहीं था उसने आखिर उसकी हत्या होगी”6

आज भी हम देखते हैं कि पद से हटते ही सब अधिकारियों को तथा सत्ता परिवर्तित होते ही नेताओं को संबंधित कर्तव्य याद आ जाते हैं।लेकिन पद पर रहते हुए कभी याद नहीं आते।

“आत्महत्या के विरुद्ध

समय आ गया है

दस बरस बाद फिर पदारूढ़ होते ही

नेतराम, पद मुक्त होते ही न्यायधीश

कहता है - समय आ गया है”7

सत्ता पक्ष निर्धन जनता का शोषण कर प्रसन्न होकर अपनी जेब भर रही है। प्रकारांतर से उनका मानना है कि यह स्वास्थ्य लोकतंत्र की निशानी नहीं है ।

“आपकी हंसी

निर्धन जनता का शोषण है

कह कर आप हंसे।

लोकतंत्र का अंतिम क्षण है

कह कर आप हंसे ।

सबसे सब के सब है भ्रष्टाचारी, कह कर आप हँसे

चारों और बड़ी लाचारी ,कह कर आप हंसे

कितने आप सुरक्षित होंगे मैं सोचने लगा

सहसा मुझे अकेला पाकर फिर से आप हँसे”8

उपर्युक्त कविता के अंशों पर गौर करें तो उनका काव्य एक विकास यात्रा के रूप में नजर आता है। प्रारंभ में उन पर उर्दू के शायरों और उत्तर छायावादी गीत कारों का गहरा प्रभाव पड़ा था।

इन प्रारंभिक प्रभावों के साथ ही रघुवीर सहाय जी ने अपनी रह का स्वयं अन्वेषण कर काव्य के लिए बातचीत की लय और शब्दों को चुना था । रघुवीर सहाय में बोलचाल की भाषा और मनुष्य मनोविज्ञान की गजब पकड़ थी। वह कविता में रोजमर्रा की बोलचाल की बातें ज्यों का त्यों लिख सकते थे । भाषा के विविध स्तरों का यथोचित उपयोग करते थे। उनका काव्य सामाजिक सरोकार का काव्य है ।

रघुवीर सहाय अपनी कहानियों एवं लेखों के माध्यम से परिवर्तन की इच्छा रखते थे और संपूर्ण मनुष्य बनाना चाहते थे। इसीलिए अपने एक कहानी संग्रह का नाम ही उन्होंने रखा ‘जो आदमी हम बना रहे हैं‘ इस कहानी संग्रह का समर्पण वाक्य था किशोर जो तरुण हो रहे हैं ।

रचना को जीवन के कितने करीब लाकर उसकी सांस और उसकी ऊष्मा को अनुभव किया जा सकता है । आखिर कितने करीब? ‘मेरे और नंगी औरतों के बीच’ इसी को व्यक्त करती कहानी है। ‘ऊबे हुए सुखी’ में ‘एक बिगड़ा हुआ मामला’ में कहते हैं – “बसंत के मौसम के विरुद्ध एक बड़ा अभियान चल रहा है । ---बसंत ऋतु है कहां ?सब जगह तो कंक्रीट का जंगल है।-- कोई चीज तो इस ऋतु में है जो इकट्ठा लोगों का इस्तेमाल करने वाली लार

टपकाती और गुर्राती इस सत्तावादी संस्कृति के विरुद्ध होगी। जिसने यह अपच और भुखमरी एक साथ पैदा की है"9 यह अपच और भुखमरी ही सबसे बड़ी त्रासदी है। इसके एक साथ के कारण ही इसे निबंध संग्रह का नाम 'ऊबे हुए सुखी' रखा गया। 'होली का दिन' शीर्षक निबंध में भारतीय संस्कृति में होली का महत्व पर प्रकाश डालने के साथ ही व्यक्तित्व गिरावट पर भी पैनी नजर डाली गई है। पीले और बसंती के बीच फर्क न कर पाना एक तरह की आलोचना है। जो पीला रंग बसंती कहकर बेचने वाले पंसारीयों ने हमारे ऊपर थोप दी है। इन पंक्तियों में सहाय जी मिलावट और जमाखोरी पर व्यंग भी करते हैं। - "होली में एक खास बात यह है कि वह घटियापन और नफासत के बीच एक सीमा बनाना सिखाती है। साथ ही नगर पालिका और पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी प्रश्न उठाते हैं जो सिर्फ सूचना देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। हुड़दंग और दंगे के बीच एक फर्क लोग सीखें यह संभव नहीं मानती हैं। पुलिस या नगरपालिका जो कानूनी विज्ञप्ति छाप कर अपना काम खत्म समझ लेते हैं"10

'भारत में भगदड़' शीर्षक लेख में सहाय जी लखीराम रेलवे स्टेशन और कुतुब मीनार में भगदड़ पर विचार प्रकट करते हुए कहते हैं –"भगदड़ का होना एक सामाजिक पतन की निशानी है और उस पतन का प्रकट होना एक खबर है। खबर यह है कि पैदल आदमी की जान का महत्व नहीं रह गया है । वह असल में इसी योग्य है कि भीड़ में कुचलकर मरे"11 यह बर्बर विचार वास्तव में सत्ताधीशों द्वारा स्वार्थवस आम आदमी की जिंदगी को महत्वहीन समझने की यथार्थ स्थिति को व्यक्त करता है। सहाय जी आम नागरिकों के खिलाफ शोषण और लूट के तत्वों के बढ़ते महत्व प्रभाव पर भी प्रहार करते हैं। कोठरियों में सीकुड़े, नावों में लदे, बसों में भरे, रेलगाड़ियों में लटके, वे मरने को अभिशप्त हैं।

सहाय जी भारतीय समाज में हिंदू और मुस्लिम खेमे बंदी से परेशान थे। जिसके परिणाम का दृश्य है दिखाते हुए बिना कहे दुष्परिणामों से बचने का उपाय भी देते हैं । एक बिल्ली के दुश्मन में वे कहते हैं – "फिलहाल वे बस्ती से निकलते जहां वे एक धार्मिक ग्रुप में कैद थे, खुले में जाते जहां हिंदुओं का वैभव उन्हें मुंह चिढ़ा रहा था. कब्रिस्तान में पहुंचते जहां अल्पसंख्यक अधिकार उनकी रक्षा कर रहे थे. क्योंकि मौलवी उस जमीन पर अपनी बस्ती का हक जता चुके थे और बर्बर हत्या के आनंद में अपने अस्मिता पाते क्योंकि किन्हीं और सामाजिक समुदायों का उनके किसी खेल में साथ ना होने से वे आनंद की नीचता कभी पहचान नहीं सकते थे"12

यही समाधान है हर खेल में सभी समुदायों का आपस में मिलकर एक साथ खेलना ,रहना या संवाद करना होना चाहिए । - "इसीलिए मैं आज और अभी विरोध कर रहा हूं। वे सब गांव से शहर बनती हुई बूची नंगी बस्तियों, धार्मिक सुरक्षा के नाम पर प्रति रक्षात्मक हिंसाएं और वे सब गरीबी के खानों में खड़े, वे सब सामाजिक कटघरे - उनका मैं मुनमुन के लिए विरोध

करता हूं। जिससे हत्यारों से वैसा ही संवाद करने का अवसर नहीं मिला जैसा वह मुझसे करती थी"13

दिसंबर 2013 की गैंग रेप कांड की घटना ने मुझे सहसा ही उनके द्वारा लिखा लेख याद दिला दिया कि रघुवीर सहाय समाज पर कितनी पैनी नजर रखते थे। 'वे और नहीं होंगे जो मारे जाएंगे' '-माया त्यागी को भूल जाओ' शीर्षक लेख में पुलिस के खतरनाक कारनामों, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा और बलात्कार और जांच आयोग की संवेदनहीन सर्वथा बिके हुए अधिकारी की रिपोर्ट के अंश पर तीखी टिप्पणी करते हैं । रिपोर्ट के अनुसार – ''यह सही है कि पुलिस ने ईश्वर त्यागी और साथियों को इसलिए गोली मार दी कि पति ने पत्नी के साथ अश्लील व्यवहार करने वाले पुलिस मैन को पीटा था। यह भी सही है कि माया त्यागी को पुलिस मैंन ने मोटर से घसीट कर बाहर निकाला था। मार मार कर कपड़े उतार डाले और नरेंद्र सिंह ने उनके सीने को हाथ लगाकर खरोच डाला, यह सही है कि माया त्यागी ने इसका पहले विरोध किया -वह नंगे बदन जमीन पर बैठी रही, वह निर्दय हाथों की मार सहने पर भी उठकर चलने को तैयार नहीं हुई। यह सही है कि पुलिस ने उसके शरीर में डंडा डाला जिससे वह लहूलुहान हो गई और तब वह उठने को मजबूर हो गई। मगर जांच आयोग यह कहता है कि पुलिस ने माया त्यागी के साथ बलात्कार नहीं किया। --- यह रिपोर्ट लिखने वाले के दिमाग के भीतर छिपी शोषणव्रति, यथास्थितिवादी विचारधारा और सत्ता के समर्थन की घिनौनी उत्सुकता को दिखाती है। यह रिपोर्ट नीचता की इंतहा बयां करती है"14

'आत्महत्या के विरुद्ध' – में मेरठ में शंकराचार्य द्वारा स्त्री का पति की चिता पर स्वेच्छा से सती होने को रोकना अधर्म करार दिए जाने पर रघुवीर सहाय जी की टिप्पणी है – "आत्महत्या को पुराने लोगों ने पाप कहा है ---उसे रोकना धर्म है। क्योंकि रोकना एक नए जीवन की संभावना जगाना है। समाज की ओर सृष्टि की हमारी लौकिक समझ के अनुसार मनुष्य के कर्म की अनंत संभावनाओं को आत्महत्या वैसे ही नष्ट कर देती है जैसे हत्या कर देती है। हम जिसे स्वेच्छा कहते हैं वह असहायता और परवशता की पराकाष्ठा का दूसरा नाम है। यह भनक पडते ही कि कोई स्त्री सती होना चाहती या किसी को सताया जा रहा है उसे रोकने का प्रयास किया जाना चाहिए। यही मानव धर्म है । बीसवीं सदी के शेषकाल में मानव मूल्यों की रक्षा के लिए हस्तक्षेप अनिवार्य है। उन्हीं से परंपरा का निर्माण संभव है,उपदेश से नहीं"15 महिलाओं के प्रति सहाय जी बेहद संवेदनशील व्यक्ति थे। सहाय जी के संपूर्ण संसार का यदि सिद्दत से विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि समाज की भलाई के लिए सहाय जी हस्तक्षेप को एकदम अनिवार्य मानते थे। उनका मानना था कि बिना हस्तक्षेप के समाज में परिवर्तन असंभव है। वे समाज की कुरीतियों को ही अपनी रचना का विषय बनाते थे।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि पत्रकार होने के कारण ही उनकी भाषा लोक भाषा है, जन भाषा है या कहें कि अखबारी भाषा है । पत्रकार के स्तर पर भी वे अपनी स्वतंत्रता को बनाए

हुए थे। अपने सिद्धांतों के लिए किसी भी तरह का समझौता न करने के लिए बदनाम थे । इसी के चलते उन्होंने बिना किसी अंतरिम व्यवस्था के आकाशवाणी की सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया था। अपने पद के अनुकूल स्थान न मिलने के कारण वे कई वर्ष तक दिनमान में नहीं आए थे। अपने बगावती तेवरों के कारण ही वे दिन। मान को अपने समय में सर्वाधिक ऊंचाई पर ले गए आत्महत्या के विरुद्ध के तीसरे संस्करण की भूमिका में उन्होंने लिखा है कि – "अखबार में लिखना या अखबार नवीसी करना। उन्होंने अपनी मातृभाषा में उतना ही रचनात्मक माना है जितना कविता करना। रचना करते रहना लोकतंत्र में जीने की शर्त है"16 विधाओं के अंतर और उसे आधार बनाकर की जाने वाली राजनीति के प्रति रघुवीर सहाय हिकारत रखते थे। इनकी रचनाओं में समकालीन यथार्थ की अभिव्यक्ति मिलती है। इन्होंने ने राजनीति के विकृत रूप की ओर हमारा ध्यान आकर्षित कराया है।

उनकी भाषा बेहद प्रयोगात्मक है। वे अपने अनुसार शब्द गढ़ते थे। इसलिए उनकी भाषा अपने पूरे गौरव के साथ अधिक ठोस, सार्थक और यथार्थ रूप लिए है। जैसे गरीबी और गिरावट का एक दिन होता है। सहाय जी अंतिम क्षण तक सामाजिक सरोकारों से जुड़े रहे। उनका संपूर्ण व्यक्तित्व ही सामाजिक सरोकार से युक्त था। एक नागरिक होने का एहसास उनमें प्रखर रूप से था। शायद यही कारण था कि वह युगांतरकारी रचनाएं दे पाए और सबसे बड़ी बात वो बोध, वो समझ दे पाए और हमें बता गए रास्ता किधर से ले।

संदर्भ-

1 स्वीकार ,सीढ़ियों पर धूप में कविता संग्रह ,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,काशी,1960

2 बसंत , दूसरा सप्तक कविता संग्रह ,संपादक अज्ञेय , भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,1951

3 यहीहूँ मैं,सीढ़ियों पर धूप में,काव्य संग्रह,रघुवीर सहाय,भारतीय ज्ञानपीठ काशी,1960

4 सभी लुजलुजे हैं, कविता ,रघुवीर सहाय

5 हमारी हिन्दी , कविता ,लोग भूल गए हैं , रघुवीर सहाय

6 रामदास ,कविता संग्रह ,हंसो हंसों जल्दी हंसों ,रघुवीर सहाय

7 समय या गया है,आत्महत्या के विरुद्ध कविता संग्रह, रघुवीर सहाय,राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली 1967

8 आपकी हंसी कविता ,हंसों हंसो जल्दी हंसों कविता संग्रह ,रघुवीर सहाय ,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1978

9 ऊबे हुए सुखी, एक बिगड़ा हुआ मामला,लेख, रघुवीर सहाय

10 होली का दिन,निबंध,रघुवीर सहाय

11 भारत में भगदड़,लेख,रघुवीर सहाय

12 एक बिल्ली के दुश्मन,लेख, रघुवीर सहाय

13 वही

14 वे और नहीं होंगे जो मारे जाएंगे, माया त्यागी को भूल जाओ , रघुवीर सहाय

15 आत्महत्या के विरुद्ध , रघुवीर सहाय

16 आत्महत्या के विरुद्ध ,तीसरे संस्करण की भूमिका , रघुवीर सहाय

प्रो नीलम राठी

संपर्क : मोबाइल नंबर : 9873910379

ई मेल drneellamrathi123@gmail.com